

श्री राम चालीसा

॥ दोहा ॥

आदो राम तपो बनानि गमनं हस्ताह मृगा काञ्छनं । वैदेशी हरनं जटायु मरनं सुत्री व सत्ताषनं ॥
बाली निर्दलं समुन्न तरनं लक्ष्मपूरी दाहनम् । पश्चद्रवेनं कुञ्जकर्ण हननं एतद्विं रामायानं ॥

॥ चौपाई ॥

श्री रघुवीर भक्त वित्कारी । सुनि लीजो प्रान् अरज हमारी ॥

निशि दिन ध्यान धरै जो कोइ । ता सम भक्त क्षेर नहि होइ ॥

ध्यान धरै शिवजी मन माही । ब्रह्मा इन्द्र पार नहि पाही ॥

जय जय जय रघुनाथ कृपाला । सदा करो सन्तन प्रतिपाला ॥

दृष्ट तुमहार बीर बनुमाना । जासु प्रभाव तिहु पुर जाना ॥

तब भूजद्वं प्रचण्ड कृपाला । रावण मारि सूरन प्रतिपाला ॥

तुम आनाथ के नाथ गोसाइ । दीनन के हो सदा सहाइ ॥

ब्रह्मादिक तब पार ना पाव । सदा इह तुमहरो भृश गावे ॥

चारिउ वेद भरत है सारी तुम भक्तन की लज्जा राखी ॥

गुण गावत शारद मम माही । सुरपति ताको पार ना पाही ॥

नाम तुमहार लेत जो कोइ । ता सम दन्य क्षेर नहि होइ ॥

राम नाम ह्य अप्ररम्पाया । चारिउ वेदन जाहि पुकारा ॥

गणपति नाम तुमहरो लीनहोई । तिनको प्रथम पूजा तुम कीनहोई ॥

शेष रटत नित नाम तुमहारा । महि को भार शशी पर धारा ॥

फुल समान रहत सो भारा । पाव न कोउ तुमहरो पारा ॥

भरत नाम तुमहरो ऊर धारो । तासो कवह न रण मे हारो ॥

नाम शत्रुहन ददर प्रकाशा । सुमिरत होत शत्रु कर नाशा ॥

लखन तुमहारे आज्ञाकारी । सदा करत सन्तन रखवारी ॥

ताते रण जाते नहि कोइ । घुङ्क जुरे बमह किन होइ ॥

महा लक्ष्मी धर आवतारा । सब विदि करत पाप को छारा ॥

सीता नाम पुनीता गारो । भुवनेश्वरी प्रभाव दिखारो ॥

घट सौ प्रकट भहि सो आइ जाको देखत चल लजाइ ॥

सो तुमरे नित पौर्व पलोटत । नरो निर्दि चरणन मे लोटत ॥

सिद्धि अठारह मङ्गलकारी । सो तुम पर जावे बलिहारी ॥

क्षेरह जो अनेक प्रभुताहि । सो पीतापति तुमहि बनही ॥

हज्जा ते कोठिन संसारा । रचत ना लागत पल की धारा ॥

जो तुमहरे चरणन चित लावे । ताकी मूँछि आवसि हो जावे ॥

जय जय जय प्रद्व ज्योति धरपा । निष्ठग ब्रह्मा अथ औ अनुपा ॥

सत्य सत्य सत्य भ्रत धारी । सत्य सनातन अनुरामी ॥

सत्य भजन तुमहरो जो गावे । सो निश्चय चारो फुल पावे ॥

सत्य शपथ गोपिपति कीनही । तुमने भक्तिरि सब सिवि दीनही ॥

सुनह राम तुम तात हमारे । तुमहि भरत कुल पूजा प्रचारे ॥

तुमहि देव कुल देव हमारे । तुम गुर देव प्राप के पारे ॥

जो कुह हो सो तुम ही राजा । जय जय जय प्रद्व राथो लाजा ॥

राम आद्या पोरग घरे । जय जय जय दशरथ दुलारे ॥

ज्ञान आदय दो ज्ञान स्त्रकपा । नमो नरो जय जय जयपति दृपा ॥

दन्य दन्य तुम धन्य प्रतापा । नाम तुमहर हरत संतापा ॥

सत्य शुद्ध देवन मुख गारा । वज्री दुम्हुडी शंख बजारा ॥

सत्य सत्य तुम सत्य सनातन । तुम ही हो हमारे तन मन धन ॥

घाको पाठ करे जो कोइ । ज्ञान प्रकट ताके ऊर होइ ॥

आवागमन मिटे तिहि केरा । सत्य बचन माने शिव मेरा ॥

क्षेर आस मन मे जो होइ । मन बाहित फुल पावे सोइ ॥

तीनह काल ध्यान जो लावै । तुलसी दल अङ्क फुल चढावै ॥

साग पत्र सो भोग लगावै । सो नर सकल सिद्धता पावै ॥

अनु समय रघुवर पुर जाइ । जहाँ जग्म हरि भक्त कहाइ ॥

श्री हरिदास कहे अङ्क पावै । सो बैकुण्ठ धाम को जावै ॥

॥ दोहा ॥

सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय । हरिदास हरि कृपा से आवसि भक्ति को पाय ॥

राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय । जो ईच्छा मन धे करे, सकल सिद्ध हो जाय ॥